अव्यक्त इशारे
दुआयें दो और दुआयें लो

1) दुआयें लेने के लिए जो असमर्थ हैं, उन्हें समर्थी दो। गुण और शक्ति का सहयोग दो। यह दुआयें लिफ्ट से भी तेज राकेट हैं, फिर आपको पुरुषार्थ में समय देना नहीं पड़ेगा, दुआओं के रॉकेट से उड़ते जायेंगे। पुरुषार्थ की मेहनत के बजाए संगम के प्रालब्ध का अनुभव करेंगे। अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगायेंगे तो आपका पुरुषार्थ स्वतः जमा होता जायेगा।

2) सेवा में किसी विशेष कार्य के निमित्त बनकर जो कार्य करते हैं उन्हें उसकी विशेष दुआयें मिलती हैं। निमित्त बनने का भाग्य मिलता है। निमित्त बनने वाले पर सभी की नज़र होने के कारण उसका स्व पर भी अटेन्शन रहता है। उनका पुरुषार्थ अपने प्रति भी सहज हो जाता है। अगर निमित्त बनी हुई आत्मा यथार्थ पार्ट बजाती है तो औरों के सहयोग की मदद मिलती है।

3) सबके दिल की दुआयें बहुत अमूल्य चीज़ हैं, दिल से जिसको जितनी दुआयें मिलती हैं, वह दिल की दुआयें जमा होती हैं तो सहज पुरुषार्थ हो जाता है। सिर्फ सेवा में जी हाज़िर, हाँ हाजिर करके पुण्य का खाता सदा बढ़ाते रहो।

4) दिल-दिमाग सदा आराम में हो, सुख-चैन की स्थिति में हो, ऐसी सन्तुष्टमणि बनो। यह सन्तुष्टता ही बाप की और सर्व की दुआयें दिलाती है। सन्तुष्ट आत्मा सदा अपने को बाप और सर्व की दुआओं के विमान में उड़ता हुआ अनुभव करेगा। दुआ मांगेगा नहीं, लेकिन दुआयें उसके आगे स्वत: ही आयेगी।

5) कोई आत्मा है ही कमजोर, तो उसकी कमजोरी को देखने के बजाए उसे सहयोग दो तो दुआयें मिलेंगी। अगर और कुछ भी नहीं कर सकते हो तो सबसे सहज पुरुषार्थ है - दुआयें दो, दुआयें लो। सम्मान दो और महिमा योग्य बनो। सम्मान देने वाला ही सर्व द्वारा माननीय बनता है और जितना अभी माननीय बनेंगे, उतना राज्य अधिकारी और पूज्य आत्मा बनेंगे।

6) वर्तमान समय प्रमाण क्षमा करना ही शिक्षा देना है। जैसे शिक्षक बनना बहुत सहज है। ऐसे क्षमा करो, रहमदिल बनो, सिर्फ शिक्षक नहीं बनो। जब अभी से क्षमा करने के संस्कार धारण करेंगे तब ही दुआएं दे और ले सकेंगे।

7) कोई अकल्याण की वृत्ति वाला है उसे आप अपने कल्याण की वृत्ति से परिवर्तन करो या क्षमा करो। परिवर्तन नहीं भी कर सकते हो, क्षमा तो कर सकते हो। मास्टर क्षमा के सागर हो, तो आपकी क्षमा उस आत्मा के लिए शिक्षा हो जायेगी। आजकल शिक्षा देने से कोई समझता, कोई नहीं समझता। क्षमा कर दो तो यह क्षमा ही शिक्षा हो जायेगी। क्षमा करना अर्थात् शुभ भावना की दुआयें देना, सहयोग देना।

8) कोई कैसी भी अवगुणधारी आत्मा हो, अज्ञानी पतित आत्मा हो, ब्राह्मण परिवार की पुरूषार्थहीन आत्मा हो, पहले उसे क्षमा करो। जैसे बेहद का बाप बच्चों की बुराई वा कमजोरी को दिल में न समाए क्षमा करते हैं, पूज्य देवता भक्तों पर क्षमा करते हैं। ऐसे आप भी विश्व कल्याणकारी मास्टर रचता, बाप के समान पूज्य आत्मा हो, आप भी किसी की बुराई वा कमजोरी दिल पर न रख पहले क्षमा करो। उसके बाद ऐसी आत्मा के कल्याण प्रति उसके वास्तविक स्वरूप और गुण को सामने रखते हुए महिमा करो अर्थात् उस आत्मा को अपनी महानता की स्मृति दिलाओ तब उसके दिल से आपके प्रति दुआयें निकलेंगी।

9) जैसे कोई शरीर कमजोर होता है तो उसे दूसरे कोई का ब्लड देकर ताकत में लाते हैं, कोई शक्तिशाली इन्जेक्शन देकर ताकत में लाते हैं, तो आप सबमें भी जो शक्तियां हैं, उस शक्ति का, गुणों का सहयोग कमजोर शक्तिहीन आत्माओं को दो। असमर्थ आत्मा को समर्थी दो। जब आप अपने गुण और शक्ति का सहयोग देंगे तब वे आपको दिल से दुआयें देंगे।

10) अगर कोई कमजोर है, वशीभूत है तो उसके प्रति पहले भाषा और संकल्प बदली करो। यह संकल्प में भी न आये कि यह तो बदलने वाला ही नहीं है अथवा पहले यह बदले, नहीं। मैं पहले बदलूं। जैसे और बातों में मैं आता है, ऐसे कोई क्या भी करता है, मुझे क्या करना है, मुझे क्या सोचना व कहना है, इसमें मैं-पन लाओ, इससे ही श्रेष्ठ वायब्रेशन फैलेगा और आपको सबकी दुआयें मिल जायेंगी।

11) बापदादा की, सर्व सेवा साथियों की और सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाले ब्राह्मण परिवार की दुआयें लेते चलो। यह दुआओं का खाता अभी बहुत जमा चाहिए। अभी दुआओं का खाता इतना सम्पन्न करो जो द्वापर से आपके चित्रों द्वारा सभी को दुआयें मिलती रहें।

12) जिसको दिल से जितनी दुआयें मिलती हैं, वह दिल की दुआयें जमा होती हैं तो पुरुषार्थ सहज हो जाता है, इसके लिए सेवा का पुण्य सदा बढ़ाते रहना। सभी को सुख देते रहना। सुख देने की दुआयें बहुत मिलती हैं। पुरुषार्थ में वह दुआयें एड हो जाती हैं।

13) जिसकी सेवा निर्विघ्न है, निर्विघ्न सेवा से ऑटोमेटिक मार्क्स बढ़ती जाती हैं। जो किसी भी बात से, चाहे कर्म से, चाहे वाणी से, चाहे मन्सा से किसी को सुख देता है उसकी मार्क्स जमा होती हैं इसलिए सुख स्वरूप बनकर सुख दो और सुख लो। दुआयें लो, दुआयें दो, इसमें कोई मेहनत नहीं है, इससे बहुत जल्दी माया बन जायेंगे।

14) सुख देने में सिर्फ ध्यान रखना कभी मर्यादा तोड़ करके किसको सुख नहीं देना। वह सुख के खाते में जमा नहीं होता है, वह ऑटोमेटिक मशीनरी दुःख के खाते में जमा हो जाती है इसलिए दिल से मर्यादापूर्वक सुख दो। दिखावा मात्र नहीं, दिल से। सुख कर्ता के बच्चे एक सेकण्ड में अपनी मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा सुख दो तो दुआयें जमा हों।

15) आप श्रेष्ठ आत्माओं के हर संकल्प में सर्व के कल्याण की, श्रेष्ठ परिवर्तन की, 'वशीभूत' से स्वतन्त्र बनाने की दिल की दुआयें वा खुशी की मुबारक सदा नैचुरल रूप में दिखाई दे क्योंकि आप सभी दाता अर्थात् देवता हो, देने वाले हो।

16) ब्राह्मण आत्मायें सुख के सागर के बच्चे, सुख स्वरूप सुखदेवा हैं। जब दुःखधाम को छोड़ चले तो न दुःख लेना है, न दुःख देना है। सुख देने से दुआयें बहुत मिलती हैं। पुरुषार्थ में यह दुआयें एड हो जाती हैं। किसी भी बात से, चाहे कर्म से, चाहे वाणी से, चाहे मन्सा से – जब कोई सुख देता है तो उसकी मार्क्स ऑटोमेटिक बढ़ती जाती हैं। तो सुख स्वरूप बनकर सुख दो और सुख लो।

17) सदा हर सेकेण्ड उमंग- उत्साह बढ़ता रहे तो एक दिन इस विश्व को उत्साह भरा अपना राज्य बना लेंगे इसलिए सदा हर एक में उत्साह भरना और दुआयें लेना। हर सेकेण्ड दुआयें लेते जाओ और दुआयें देते जाओ। आपकी दुआओं से सदा सर्व आत्मायें सुखी हो जायेंगी।

18) समस्याओं के वशीभूत कमजोर आत्मा को शक्ति और गुणों का सहयोग दो, असमर्थ को समर्थी दो तो उनकी दुआयें आपके लिए लिफ्ट बन जायेंगी। अब पुरुषार्थ की मेहनत के बजाए संगम की प्रालब्ध का अनुभव करो, दुआयें लेना सीखो और सिखाओ। प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना - यह है दुआयें लेना और दुआयें देना। यह दुआयें सहज ही मायाजीत बना देंगी।

19) कोई कैसा भी हो, ग्लानि करने वाला भी हो तो भी आपके दिल से उस आत्मा के प्रति हर समय दुआयें निकलती रहें - इसका भी कल्याण हो, इसकी भी बुद्धि शान्त हो, आपके शुभ भावना वाले श्रेष्ठ संकल्प उसे परिवर्तन कर देंगे।

20) सहन करने के पीछे शक्ति है। सहन करना अर्थात् शक्ति रूप को प्रत्यक्ष रूप में दिखाना। सहन किया तो किसके प्रति सहन किया? बाप के आज्ञाकारी बनने के लिये सहन किया, दूसरे के लिये नहीं सहन किया, बाप की आज्ञा मानी। तो आज्ञा मानने की दुआयें जरूर मिलेंगी।

21) कई बच्चे बातों को सामने देखते हैं और सोचते हैं कि हमने तो बहुत सहन किया, कब तक सहन करेंगे, सहन करने की भी कोई हद होनी चाहिए। लेकिन जितना बेहद सहन, उतनी बेहद की दुआयें क्योंकि बाप के आज्ञाकारी बन रहे हैं। बाप ने कहा है सहन करो इसलिए मजबूरी से सहन नहीं करो, खुशी से सहन करो, इसमें ही फायदा है।

22) अमृतवेले से लेकर रात तक यही लक्ष्य रखो कि दुआयें देनी हैं, दुआयें लेनी हैं। और कुछ भी नहीं करो लेकिन दुआएं दो और दुआएं लो। कोई आपको दुःख भी दे तो भी आपको दुआयें देनी हैं, इससे सहनशीलता का गुण स्वतः आ जायेगा।

23) हर समय, हर आत्मा के प्रति मन्सा स्वतः शुभ- भावना और शुभ-कामना के शुद्ध वायब्रेशन वाली स्वयं को और दूसरों को अनुभव हो। मन से हर समय सर्व आत्माओं के

प्रति दुआयें निकलती रहें। मन्सा सदा इसी सेवा में बिजी रहे। जैसे वाचा की सेवा में बिजी रहने के अनुभवी हो गये हो। अगर सेवा नहीं मिलती तो अपने को खाली अनुभव करते हो। ऐसे हर समय वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा स्वत: होती रहे।

24) बापदादा की आज्ञा मिली हुई है - बच्चे न व्यर्थ सोचो, न देखो, न व्यर्थ सुनो, न व्यर्थ बोलो, न व्यर्थ कर्म में समय गंवाओ। आप बुराई से तो पार हो गये। अब ऐसे आज्ञाकारी चरित्र का चित्र बनाओ तो परमात्म दुआओं के अधिकारी बन जायेंगे।

25) बाप की आज्ञा है बच्चे अमृतवेले विधिपूर्वक शक्तिशाली याद में रहो, हर कर्म कर्मयोगी बनकर, निमित्त भाव से, निर्माण बनकर करो। ऐसे दृष्टि-वृत्ति सबके लिए आज्ञा मिली हुई है। यदि उन आज्ञाओं का विधिपूर्वक पालन करते चलो तो सदा अतीन्द्रिय सुख वा खुशी सम्पन्न शान्त स्थिति अनुभव करते रहेंगे।

26) बाप की आज्ञा है बच्चे तन-मन-धन और जन – इन सबको बाप की अमानत समझो। जो भी संकल्प करते हो वह पॉजिटिव हो, पॉजिटिव सोचो, शुभ भावना के संकल्प करो। बॉडीकान्सेस के "मैं और मेरेपन से" दूर रहो, यही दो माया के दरवाजे हैं। संकल्प, समय और श्वांस ब्राह्मण जीवन के अमूल्य खजाने हैं, इन्हें व्यर्थ नहीं गंवाओ। जमा करो। ऐसे आज्ञाकारी बच्चे को मात-पिता की दुआयें मिलती हैं।

27) बापदादा की मुख्य पहली आज्ञा है - पवित्र बनो, कामजीत बनो। इस आज्ञा को पालन करने में मैजारिटी पास हो जाते हैं। लेकिन उनका दूसरा भाई क्रोध - उसमें कभी-कभी आधा फेल हो जाते हैं। कई कहते हैं - क्रोध नहीं किया लेकिन थोड़ा रोब तो दिखाना ही पड़ता है, तो यह भी अवज्ञा हुई, अवज्ञा करने वाले बच्चे को दुआयें मिल नहीं सकती।

28) जो बच्चे अमृतवेले से रात तक सारे दिन की दिनचर्या के हर कर्म में आज्ञा प्रमाण चलते हैं वे कभी मेहनत का अनुभव नहीं करते। उन्हें आज्ञाकारी बनने का विशेष फल बाप के आशीर्वाद की अनुभूति होती है, उनका हर कर्म फलदाई हो जाता है।

29) जो आज्ञाकारी बच्चे हैं वे सदा सन्तुष्टता का अनुभव करते हैं। उन्हें तीनों ही प्रकार की सन्तुष्टता स्वत: और सदा अनुभव होती है। 1- वे स्वयं भी सन्तुष्ट रहते। 2- विधि पूर्वक कर्म करने के कारण सफलता रूपी फल की प्राप्ति से भी सन्तुष्ट रहते। 3- सम्बन्ध-सम्पर्क में भी उनसे सभी सन्तुष्ट रहते हैं। सदा सन्तुष्ट रहना और सर्व को सन्तुष्ट करना यही दुआयें लेने का सहज साधन है।

30) आज्ञाकारी बच्चों का हर कर्म आज्ञा प्रमाण होने के कारण श्रेष्ठ होता है इसलिए कोई भी कर्म बुद्धि वा मन को विचलित नहीं करता, ठीक किया वा नहीं किया, यह संकल्प भी नहीं आ सकता। वे आज्ञा प्रमाण चलने के कारण सदा हल्के रहते हैं। हर कर्म आज्ञा प्रमाण करने के कारण परमात्म आशीर्वाद की प्राप्ति के फल स्वरूप वे सदा ही आन्तरिक विल पावर का, अतीन्द्रिय सुख का और भरपूरता का अनुभव करते हैं।